ग़ज़ल संग्रह

01621

अफ़ज़ल

हाजी ज़फ़र उल्ला खाँ "ज़फ़र"
टीकमगढ़ (म.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

आदरणीय जिला पुस्तकालय टीकमगढ़ को
सादर सप्रेम भेंट

ग़ज़ल - संग्रह

सौजन्य से — राजीव नामदेव "राना लिधौरी"
संपादक- 'आकांक्षा' पत्रिका

41621

अश्क

हाजी ज़फ़र उल्ला खॉ "ज़फ़र"
टीकमगढ़ (म.०प्र.)

–प्रकाशक–

नशेमन पब्लिकेशन मारफ़त
अशरफ उल्ला खॉ
मौहल्ला सैल सागर
टीकमगढ़ (म.प्र.)
मोबाईल– 8889496624, 9826263908

प्राप्ति स्थान –

अपेक्स कम्प्यूटर एवं फोटो कॉपी
मस्जिद भिश्तयान, पुराना बस स्टेण्ड के पास
टीकमगढ़ (म.प्र.) 472001

कीमत– 201/– रूपये
आठवीं किताब– सन् 2022

@ सर्वाधिकारी सुरक्षित
हाजी "ज़फ़र" उल्ला खॉ "ज़फ़र"

ASHQ

(GAZAL SANGRAH)

मुद्रक – अशरफ उल्ला खॉ, अपैक्स कम्प्यूटर ग्राफिक्स,
पुराना बस स्टेण्ड, टीकमगढ़ (म.प्र.)

अश्क

Scanned with OKEN Scanner

n1621

–अपनी बात–

अश्क किताब लिखने का मकसद सिर्फ शेरों शायरी, मनोरंजन तक नहीं बल्कि समाज, धर्म राजनीति में आज का दौर जिस रास्ते पर चल रहा है उससे तरक्की तो नज़र आती है मगर नौतिकता, सभ्यता, गर्क में जा रही है इसलिये हर पहलू अनुभव के आधार देख सुनकर, समझते हुये समाज के छोटे बड़े, अमीर, गरीब बच्चों को बूढ़ों तक मजदूर, किसान, व्यापारी, कर्मचारी, धर्माचारी, और सियासती इन सभी का मकसद सिर्फ पैसा कमाना रह गया है। बैक और कोर्ट पर भी उँगलियाँ उठने लगी है, कानून तो आजकल सबल हाथें की कठपुतली बनकर रह गया है समाज का कोई व्यक्ति मदद क्या सुनने को तैयार नहीं, इसीलिये गलत रास्ता अख्तयार कर लेता है जिसकी बजह से समाज दूषित होता जा रहा है, आदमी का आदमी पर भरोसा नहीं रहा। शहर टीकमगढ़ में आप के जरिये शहर के शायरों को जोड़े हुए हैं "अश्क" से पहले आपकी गज़लें, और अशआर भी **"वक्त की आवाज़"**, **"अभी लम्बा है सफर"**, **"जज्बात"**, **"इज्हार–ए–कल्ब"**, **"शगुफ्फता चमन"** **"मुसाफिर"**, **"मंजिल"** **"तमन्ना"** नामक पुस्तकों में शाया हो चुके हैं, और मध्यप्रदेश लेखक संघ द्वारा शायर को ऑचलिक साहित्यकार सम्मान तथा मंजर अवार्ड से पुरूष्कृत भी किया गया है। माह मार्च 2007 में एक गज़ल भारत के पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (मिशाइल मेन) जी के लिये लिखी जिस पर उनके द्वारा 7 मार्च 2007 को प्रमाण पत्र से पुरूष्कृत किया जा चुका है। समाज और मुआशरे में बढ़ रही बुराईयों भृष्टाचारी, रिश्वतखोरी, इन्सानियत से उठता भरोसा उसकी जिन्दगी अखलाको मोहब्बत हमदर्दो जैसी बातों का समाज से होता पतन इन सभी बातों से उठकर समाज और इन्सान को आगाह करना है कि जिससे समाज को गर्त में जा रहा कुछ तो जागे क्योंकि चुपचाप इन बुराईयों को देखना और उनसे मुंह मोड़लेना सभ्य इंशान की निशानी नहीं है इसलिये शायर ने अपनी तरफ से कोशिश की हे इन्सान कुछ सोचे और कुछ अच्छा करने के लिये मुतास्सिर हो। अगर सुधार लाना है तो एक नारा ही आपको सही रास्ते पर ला सकता है "हम सुधरेंगे जग सुधरेगा" इस मकसद से ये किताब लिखी गई है एक प्रतिशत भी अमल करें तो कुछ न कुछ हासिल होगा इस काम में हमारे दोनों बच्चे फरहत उल्ला खॉ, अशरफ उल्ला खॉन और पोते, मोहम्मद मोहसिन खॉन, मोहम्मद फैज़ान खॉन, तथा मोहम्मद असअद खॉन ने पूरी मदद और मेहनत की है मैं उकने लिये दुआ करता हूँ कि वो सभी हमेशा मिलजुल कर रहें और सभी लोग हमेशा खुश रहें।

हाज़ी ज़फ़र उल्ला खॉ "ज़फ़र"

n1621

–संक्षिप्त समीक्षा–

शायर हाजी ज़फ़र उल्ला खॉ साहब आप किसी परिचय के मोहताज नहीं है उनकी ग़ज़लें ही उनका परिचर करा देती हैं, अपनी सतत लेखनी से इससे पहले सात ग़ज़ल संग्रह अब तक प्रकाशित हो चुके हैं, और आगे भी कई संग्रह प्रकाशित होने की उम्मीद भी है।

आपने ग़ज़लों के पुराने पेटर्न की अपेक्षा नये–नये विषयों पर अपनी कलम चलाई है, हाल ही में मौजूदा हालात कोरोना पर अपनी बात पूरी की पूरी समाज के सामने रखी है। आज भी 85 साल की उम्र में महिने में 12–15 ग़ज़ले लिखने का माददा रखते हैं, वे तरह मिसरा पर भी कई वर्षो से लगातार ग़ज़लें लिख रहे हैं, हमेशा नई ग़ज़ल सुनाना उनकी बहुत बड़ी ख़ूबी है। साहित्यक संस्था म.प्र. लेखक संघ जिला ईकाई टीकमगढ़ ने आपको ग़ज़ल के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित भी किया है अनेक संस्थाओं द्वारा आपको सम्मानित किया जा चुका है। ज़फ़र साहब की इस **"अश्क"** ग़ज़ल संग्रह में अनेक विषयों पर शेर कहे गये हैं। उनका ये शेर देखें –

मानते हो रूह को उसको कहीं देखा कभी।
दिलको सुकूँ तो मिल गया है क्या उसे देखा कभी।।

कोरोना पर लिखते हैं –

ऐ लॉक डाउन कब तलक बढ़ता ही रहेगा।
मुफ़लिस किसान भुखा ही क्या मरता रहेगा।।

हाज़ी ज़फ़र साहब का ये ग़ज़ल संग्रह पठनीय है नयी ग़ज़ल प्रेमियों के लिये एक खास तोहफा है। "अश्क" के प्रकाशन पर उन्हें बहुत–बहुत मुबारकबाद।

राजीव नामदेव "राना लिधौरी"
अध्यक्ष– म.प्र. लेखक संघ, टीकमगढ़
संपादक–'आकांक्षा' पत्रिका
टीकमगढ़ (म.प्र.) मोबाईल – 9893520965

Scanned with OKEN Scanner

–फेहरिस्त–

1. पूछो न हाल
2. भूल गये
3. क़ता
4. गुजारें कैसे
5. दिल गुजर गये
6. बदल रहा है
7. क़ता
8. आना जाना
9. मजे उड़ायेंगे
10. कर पाये बंदा
11. एक है
12. क़ता
13. बदल रही
14. प्यार पाक़ीजा
15. हिन्दोस्तान का
16. लॉक डाउन
17. आना हो गया
18. रोज़ा छोड़ा
19. उछल रहे
20. अपना मुकाम है
21. उल्फ़त नहीं
22. नहीं डरते
23. नज़ारा
24. सारे जहॉन में
25. मक्कार हैं
26. कतराने लगे हैं
27. बे हिसाब भी हैं
28. टुकड़ा कागज का
29. शायर के पास
30. सुल्तान हो गया
31. हम क्या करें
32. बेड़ा पार हो
33. चकरा गया
34. कैसा हाल है
35. जमाना बंद है
36. कैसे खायें
37. देखा कभी
38. अपने मकान में
39. खामोशी छाई है
40. दुश्वार है
41. हंसी गुल्फ़ाम नहीं
42. कोरोना
43. कामयाब हैं
44. सॉचे में ढल गया
45. क्यों हैरान है
46. हिला नहीं जाता
47. गंगा है
48. कैसे करूँ ब्यॉ
49. हम कहॉ होते
50. मशीनों से कढाई
51. बदलना सीखो
52. खूब बजाओ
53. नहीं मालूम
54. पहचान है
55. ग़ज़ल अधूरी है
56. फ़ानी है
57. मुफ़लिसी के मारों की
58. पहचान थी
59. बशर में है
60. तुम्हें क्या मालूम
61. बेदार
62. बदलते हैं
63. बदल रही
64. यह हद प्यार की
65. जेबें टटोलता है
66. शायर के घर में
67. उस पर पड़ा अज़ाब
68. बताओ में कौन हूँ
69. आ गई गिरानी
70. छोटा बच्चा
71. अरमान नहीं
72. हालात नहीं
73. मै कौन हूँ
74. इन्सानियत
75. ख़म नहीं होते
76. सह पाओगे
77. पिसर
78. नक़ाब
79. ऑसू निकल गये
80. राहत तो है
81. इन्सान की नहीं
82. हम दूर हो गये
83. बेफिक्र हो गये
84. सच्चा साथी
85. दुआ करता है
86. चाहत छोड़ दीश
87. इबादत छोड़ दी
88. तोड़ो नहीं नाता
89. परेशान यहॉ
90. मोबाईल
91. हिन्द का परचम
92. परेशान नहीं
93. फ़रमान
94. आला कलाम
95. साथ हमारे लेलो ना
96. कोई बात नहीं
97. ख़्वाब था
98. वो नाता है
99. हैरान है
100. इन्सान नहीं
101. हिदायत
102. कचरा
103. इज़्ज़त नहीं
104. रूख़सती
105. आसान हो
106. क़ता
107. जिन पर साया
108. गुलाम नहीं
109. गौमाता
110. इन्तजार का
111. रंगों का
112. हिज़ाब
113. कैसी हालत
114. नहीं कर पाये
115. मौसम
116. किरदार है
117. चुनाव
118. इक दिन मिल
119. रास्ता बता
120. आदत नहीं
121. करें भी क्या
122. तिरंगा
123. नशेमन
124. हिदायत
125. अलग अंदाज
126. बेशुमार
127. क़ता
128. पाओगे इफ़रात

Scanned with OKEN Scanner

नाम– **हाजी ज़फ़र उल्ला खॉ "ज़फ़र"**

जन्म– 10.07.1937, टीकमगढ़ (म.प्र.)

पिता– मरहूम इस्लाम उल्ला खॉ "नायव तहसीलदार"

शिक्षा– मेट्रिक

विधायें – ग़ज़ल, नज़्म, हम्द, नात, गीत

शौक– अदबी खिदमात, खेल, ड्राईग, संगीत

सम्मान– म.प्र. लेखक संघ का ऑचलिक सम्मान, मंजर अवार्ड, इंडियन मुस्लिम एसोसिएशन महाराष्ट्र समाज सेवा सम्मान, म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन सम्मान संभाग सागर, जनाव हुसैन मैहर सम्मान, तंज़ीम बज़्मे अदव टीकमगढ़ मंजर अवार्ड, म.प्र. लेखक संघ भोपाल मेहमूद ज़की ग़ज़ल सम्मान, श्रीमंत माधवराव सिंधिया माधव सम्मान, ईदगाह प्रबंध कमेटी द्वारा विशेष ग़ज़ल सम्मान, कोरोना वेरियर ऑनर टीकमगढ़ द्वारा वरिष्ठ शायर सम्मान, अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस समारोह समाज सेवा सम्मान, राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलॉम जी द्वारा ग़ज़ल के आधार पर सम्मानित प्रमाण पत्र वर्ष **2007**

41621

प्रो. **अपेक्स कम्प्यूटर ग्राफिक्स एवं फोटो कॉपी टीकमगढ़**

सम्पर्क – **हाजी ज़फ़र उल्ला खॉ "ज़फ़र"**

मोबाईल – **8889496624. 9826263908**

प्रकाशन एवं प्रसारण – ***"अश्क"***

ग़ज़ल संग्रह आकशवाणी
एवं तमाम पत्र पत्रिकाओं में
प्रकाशन एवं प्रसारण

Scanned with OKEN Scanner